अध्याय

2 दो गौरैया

कविता का सारांश

लेखक के घर में बहुत-से पशु-पक्षी आते जाते रहते थे, जिसकी वजह से लेखक के पिताजी को बहुत परेशानी होती थी। उन्हें लगता था कि इस घर के मालिक वह न होकर पशु-पक्षी हैं। उनके घर में चूहे , कबूतर ,गौरैया ,आदि रहते थे।बिल्ली उनके घर में रहती तो नहीं थी परंतु वह आकर घर का दूध पी जाती थी। चूहों से तो वह इतने परेशान थे कि रात में ठीक तरह से सो भी नहीं पाते थे क्योंकि कभी चूहे इधर-उधर भागते थे तो कभी कोई डिब्बा खोल देते थे। उनके घर के आँगन में एक आम का पेड़ था जिस पर विभिन्न प्रकार के पक्षियों ने अपना डेरा बनाया हुआ था। सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि दो चिड़ियों ने उनके कमरे के पंखे के ऊपर अपना घोंसला बना लिया और बहुत प्रयत्न करने के बाद भी वह वहाँ से नहीं गईं। जब लेखक के पिताजी को पता चला कि चिड़ियों के बाहर न जाने का कारण घोंसले में छोटे-छोटे उनके बच्चे हैं ,तब उन्होंने उन्हें बाहर निकालने का प्रयत्न करना छोड़ दिया।

शब्दार्थ

• **सराय**—धर्मशाला, • **डेरा**—रहने की जगह, • **धमा-चौकड़ी**—उछल-कूद, • **निरीक्षण**—जाँच करना, • **रोशनदान**—बाहर की रोशनी के लिए छोटी-सी खिड़की, • **गुमसुम**—चुपचाप।

NCERT कॉर्नर

पाठ से

आइए, अब हम इस कहानी को थोड़ी और स्पष्टता से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

Page - 19

प्रश्न (क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) **पिताजी ने कहा कि घर सराय बना हुआ है, क्योंकि :**

- घर की बनावट सराय जैसी बहुत विशाल है
- घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जन्तु रहते हैं
- पिताजी और माँ घर के मालिक नहीं हैं
- घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते हैं

(2) **कहानी में 'घर के असली मालिक' किसे कहा गया है?**

- माँ और पिताजी को जिनका वह मकान है
- लेखक को जिसने यह कहानी लिखी है
- जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे
- मेहमानों को जो लेखक से मिलने आते थे

(3) **गौरैया के प्रति माँ और पिताजी की प्रतिक्रियाएँ कैसी थीं?**

- दोनों ने खुशी से घर में उनका स्वागत किया
- पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया
- दोनों ने मिलकर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया
- माँ ने उन्हें निकालने के लिए कहा लेकिन पिताजी ने घर में रहने दिया

(4) **माँ बार-बार पिताजी की बातों पर मुसकराती और मज़ाक करती थीं। इससे क्या पता चलता है?**

- माँ चाहती थीं कि गौरैया घर से भगाई न जाएँ
- माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे
- माँ को गौरैयों की गतिविधियों पर हँसी आ जाती थीं
- माँ को दूसरों पर हँसना और उपहास करना अच्छा लगता था

(5) **कहानी में गौरैयों के बार-बार लौटने को जीवन के किस पहलू से जोड़ा जा सकता है?**

- दूसरों पर निर्भर रहना
- असफलताओं से हार मान लेना
- अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना
- संघर्ष को छोड़कर नए रास्ते अपनाना

उत्तर— 1. घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं ★
घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते रहते हैं ★
2. जीव जंतुओं को जो उस घर में रहते हैं ★
3. पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया ★
4. माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे ★
माँ को गौरैयों की गतिविधियों पर हँसी आ जाती थी ★
5. अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना ★

प्रश्न (ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

मिलकर करें मिलान

Page - 20

प्रश्न (क) पाठ में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो अर्थ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सबसे उपयुक्त अर्थ से मिलाइए।

क्र.	वाक्य	अर्थ
1.	वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं।	• पक्षियों का शोर बहुत तेज़ होता है, लेकिन लोग उसे संगीत की तरह सराहते हैं। • पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।
2.	आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं।	• आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं। • पक्षी पेड़ पर तंबू लगाकर रहते हैं जैसे किसी मेले में डेरा डाला जाता है।
3.	वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते।	• पिताजी की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के चूहे चैन से सो नहीं पाते। • चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।
4.	वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं।	• पिताजी माँ का मजाक समझ जाते हैं। • पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।

5.	पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।	• पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए। • पिताजी की छाती और साँस फूलने लगी और उन्होंने लाठी एक ओर रख दी।
6.	इतने में रात पड़ गई।	• रात किसी भारी चीज़ की तरह ऊपर से गिर पड़ी। • कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।
7.	जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं।	• गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों। • गौरैया शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रही थीं और 'राग मल्हार' गा रही थीं।

उत्तर—

क्र.	वाक्य	अर्थ
1.	वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं।	✓• पक्षियों का शोर बहुत तेज़ होता है, लेकिन लोग उसे संगीत की तरह सराहते हैं। • पिताजी का पक्षियों को चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।
2.	आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं।	✓• आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं। • पक्षी पेड़ पर तंबू लगाकर रहते हैं जैसे किसी मेले में डेरा डाला जाता है।
3.	वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते।	• पिताजी की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के चूहे चैन से सो नहीं पाते। ✓• चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।
4.	वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं।	• पिताजी माँ का मजाक समझ जाते हैं। ✓• पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।
5.	पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।	✓• पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए। • पिताजी की छाती और साँस फूलने लगी और उन्होंने लाठी एक ओर रख दी।
6.	इतने में रात पड़ गई।	• रात किसी भारी चीज़ की तरह ऊपर से गिर पड़ी। ✓• कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।
7.	जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं।	✓• गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों। • गौरैयाँ शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रही थीं और 'राग मल्हार' गा रही थीं।

प्रश्न (ख) अपने उत्तर को अपने मित्रों के उत्तर से मिलाइए और विचार कीजिए कि अपने कौन-से अर्थ का चुनाव किया और क्यों?

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पंक्तियों पर चर्चा

Page - 21

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

प्रश्न (क) "अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।"

उत्तर– इस पंक्ति का जो अर्थ मुझे समझ आया वह निम्नलिखित है–

लेखक की माँ का कहना था कि पहले ये गौरैया यहाँ अस्थायी रूप से थीं; यदि तभी इन्हें डराकर भगा देते, तो वे उड़ जातीं लेकिन अब उन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है, यानी अब वे यहीं स्थायी रूप से बस गई हैं, इसलिए अब इन्हें उड़ाना आसान नहीं है।

प्रश्न (ख) "एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।"

उत्तर– लेखक के पिताजी घर का रोशनदान और दरवाज़े के नीचे कपड़ा लगा देते हैं। वह कहते हैं कि यदि एक दिन वह दो गौरैया घर में नहीं घुस पाएँगी तो यहाँ आना छोड़ देंगी।

प्रश्न (ग) "किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए।"

उत्तर– लेखक के पिताजी का मानना था कि अगर किसी को किसी जगह से बाहर निकालना हो, तो उसका घर (रहने की जगह) ही तोड़ देनी चाहिए ताकि वह मजबूरी में वहाँ से चला जाए। मेरी समझ से किसी का घर तोड़ना उसके साथ अन्याय करना है।

सोच-विचार के लिए

Page - 21

पाठ को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

प्रश्न (क) आपको कहानी का कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा—घर पर रहने आई गौरैयाँ, माँ, पिताजी, लेखक या कोई अन्य प्राणी? आपको उसकी कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं और क्यों?

उत्तर– मुझे इस कहानी में 'गौरैया' सबसे अच्छा पात्र लगी क्योंकि दो गौरैया बिना किसी स्वार्थ के लेखक के घर में आती थी, और उन्होंने वहीं घोंसला बना लिया था। जब वे चहचहाती थीं तब उनकी उपस्थिति से लेखक को घर में रौनक और अपनेपन का एहसास होता था।

प्रश्न (ख) लेखक के घर में चिड़िया ने अपना घोंसला कहाँ बनाया? उसने घोंसला वहीं क्यों बनाया होगा?

उत्तर– लेखक के घर में चिड़िया ने अपना घोंसला पंखे के ऊपर बने गोले में बनाया। उसने वह घोंसला वहाँ इसलिए बनाया क्योंकि सुरक्षा की दृष्टि से वहाँ घोंसला बनाना सुरक्षित था।

प्रश्न (ग) क्या आपको लगता है कि पशु पक्षी भी मनुष्यों के समान परिवार और घर का महत्त्व समझते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कहानी से उदाहरण दीजिए।

उत्तर– हाँ, मुझे लगता है कि चिड़ियाँ भी मनुष्यों की तरह परिवार और घर का महत्त्व समझती हैं। कहानी "दो गौरैया" में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि गौरैयों ने लेखक के घर में घोंसला बनाया था। वह बार-बार आतीं थीं, दाना लाती थीं, और अपने बच्चों की देखभाल करती थीं। यह व्यवहार मनुष्यों की तरह ही घर बसाने और परिवार पालने की भावना को दर्शाता है। जब घर के दरवाज़े-खिड़कियाँ बंद कर दिए गए तब गौरैयाँ बार-बार खिड़की पर आकर अंदर घुसने की कोशिश करती थीं। इन सब बातों से पता चलता है कि वह अपने घर और परिवार से जुड़ी हुई थीं।

प्रश्न (घ) "मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।"- इस कथन से पिताजी के स्वभाव के कौन-से गुण उभरकर आते हैं?

उत्तर– "मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।" इस कथन से पिताजी का दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास, व्यावहारिकता और समस्या से जूझने का साहस सामने आता है। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कठिनाइयों से घबराते नहीं हैं।

प्रश्न (ङ) कहानी में गौरैयों के व्यवहार में कब और कैसा बदलाव आया? यह बदलाव क्यों आया?
(संकेत- कहानी में खोजिए कि उन्होंने गाना कब बंद कर दिया?)

उत्तर– जब लेखक के पिताजी लाठी से गौरैयों का घोंसला तोड़ रहे थे तब दोनों गौरैयाँ शांत हो गईं और चुपचाप बैठकर बाहर से अंदर देखने लगीं। दोनों गौरैयों ने चहचहाना बंद कर दिया क्योंकि उनके सामने उनका वो घर तोड़ा जा रहा था जिसमें उनके दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

प्रश्न (च) कहानी में गौरैयों ने किन-किन स्थानों से घर में प्रवेश किया था? सूची बनाइए।

उत्तर– गौरैयों ने घर में प्रवेश करने के लिए कई रास्तों का उपयोग किया था। जिसकी सूची निम्नलिखित है -

1. रोशनदान से
2. खिड़की से
3. दरवाज़े से
4. चौखट और दीवार के बीच की संकरी जगह से

प्रश्न (छ) इस कहानी को कौन सुन रहा है? आपको यह बात कैसे पता चली?

उत्तर– इस कहानी को स्वयं लेखक सुना रहा है। कहानी में माँ और पिताजी के संबोधन से पता चलता है कि यह कहानी स्वयं लेखक की है।

प्रश्न (ज) माँ बार-बार क्यों कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी?

उत्तर— माँ को पता था कि घोंसले में गौरैयों के बच्चे हैं ,और कोई भी माता-पिता अपने बच्चों को नहीं छोड़ सकते, इसलिए, वह बार-बार कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी।

अनुमान और कल्पना से

Page - 22

प्रश्न (क) कल्पना कीजिए कि आप उस घर में रहते हैं जहाँ चिड़ियाँ अपना घर बना रही हैं। अपने घर में उन्हें देखकर आप क्या करते?

उत्तर— अगर मैं उस घर में रहता जहाँ चिड़ियाँ (गौरैयाँ) अपना घोंसला बना रही होतीं, तो मैं उन्हें देखकर खुश होता। उनके आने-जाने, चहचहाने और तिनके लाने की मेहनत को देखना बहुत अच्छा लगता है। मैं उन्हें कभी डराता नहीं, बल्कि उन्हें सुरक्षित महसूस कराता ताकि वे बिना डर के अपने अंडों और बच्चों की देखभाल कर सकें। मैं उनके लिए पानी और थोड़े-से दाने भी रखता ताकि उन्हें भोजन के लिए बहुत दूर न जाना पड़े। मैं घर के उस हिस्से को साफ़ रखता जहाँ चिड़ियों से गन्दगी फैलती है , लेकिन कभी भी घोंसले को नहीं छेड़ता। क्योंकि वह उनका घर है, और हर जीव को अपने घर का अधिकार है।

प्रश्न (ख) मान लीजिए कि कहानी में चिड़िया नहीं, बल्कि नीचे दिए गए प्राणियों में से कोई एक प्राणी घर में घुस गया है। ऐसे में घर के लोगों का व्यवहार कैसा होगा? क्यों? (प्राणियों के नाम—चूहा, कुत्ता, मच्छर, बिल्ली, कबूतर, कॉकरोच, छिपकली, मेंढक)

उत्तर— यदि कहानी में गौरैया की जगह कोई चूहा घर में घुस आया होता, तो घर के लोगों का व्यवहार बहुत अलग होता। घर के सभी लोग चूहे को देखकर चौंक जाते, और डर भी जाते। वे तुरंत चूहे को डंडे या झाड़ू से भगाने लगते, या फिर चूहेदानी लगाते ताकि वह पकड़ा जाए क्योंकि चूहा गंदगी फैलाता है और कपड़े-किताबें कुतर देता है, इसलिए लोग उसे हानिकारक और अवांछित मानते हैं।

प्रश्न (ग) ''मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा।'' लेखक को विस्मय या हैरानी किसे देखकर हुई ? उसे विस्मय क्यों हुआ होगा?

उत्तर— जब लेखक ने गौरैयों को खिड़की के बाहर बैठा देखा, जो अंदर आने की कोशिश कर रही थीं। लेखक को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गौरैयों को बार-बार रोके जाने के बाद भी वे घर लौटने की कोशिश में लगी हुई थीं। गौरैयों में अपने घर व बच्चों के प्रति प्रेम और अपनेपन की भावना देखकर लेखक अवाक् रह गया और सोच में पड़ गया।

प्रश्न (घ) ''माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थीं।'' माँ ने गौरैयों को निकालने में पिताजी की सहायता क्यों नहीं की होगी?

उत्तर— माँ को पता था कि गौरैयाँ घर से बाहर नहीं जाएँगी क्योंकि उनका घोंसला और बच्चे उनके घर में हैं। उन्हें पिताजी की मेहनत व्यर्थ लग रही थी इसलिए वह सिर्फ़ हँसे जा रही थीं। माँ गौरैयों को घर से बाहर नहीं निकालना चाहती होंगी, इसलिए उन्होंने पिताजी की सहायता नहीं की होगी।

प्रश्न (ङ) ''एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है।'' लेखक ने चूहे के विशेष व्यवहार से अनुमान लगाया कि उसे सर्दी लगती होगी। आप भी किसी एक अपरिचित व्यक्ति या प्राणी के व्यवहार को ध्यान से देखकर अनुमान लगाइए कि वह क्या सोच रहा होगा, क्या करता होगा या वह कैसा व्यक्ति होगा आदि।
(संकेत—आपको उसके व्यवहार पर ध्यान देना है, उसके रंग-रूप या वेशभूषा पर नहीं)

उत्तर— मैंने एक अधेड़ व्यक्ति को कई दिनों से पास के पार्क में अकेले एक ही बेंच पर उदास बैठते देखा है। वह हर बार जेब से एक मुड़ी-तुड़ी चिट्ठी निकालता, ध्यान से पढ़ता और फिर गहरी साँस लेकर उसे वापस रख देता। वह किसी से बात नहीं करता, बस आते-जाते लोगों को देखता रहता है। उसके इस व्यवहार से मुझे लगता है कि वह शायद किसी पुराने अपने की याद में खोया रहता है: हो सकता है वह व्यक्ति अब उसके जीवन में न रहा हो। वह दिनभर वहीं बैठकर उसी स्मृति को जीता है, जैसे उसे भूलना नहीं चाहता। वह शायद बहुत संवेदनशील और भावुक स्वभाव का व्यक्ति होगा।

प्रश्न (च) ''पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है।'' सराय और घर में कौन-कौन से अंतर होते होंगे?

उत्तर— सराय और घर में मुख्य अंतर यह है कि घर वह स्थान होता है जहाँ परिवार, अपनापन, भावनाएँ और स्थायित्व होता है और सराय एक ऐसा ठिकाना होता है जहाँ लोग आते-जाते रहते हैं, वहाँ कोई स्थायी संबंध या भावनात्मक जुड़ाव नहीं होता।

संवाद और अभिनय

Page - 22

नीचे दी गई स्थितियों के लिए अपने समूह में मिलकर अपनी कल्पना से संवाद लिखिए और बातचीत को अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न (क) ''वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं , ''हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?'' नन्हीं-नन्हीं दो गौरैया क्या-क्या बोल रही होंगी?

उत्तर— नन्हीं-नन्हीं दो गौरैया शायद यह कह रही होंगी—

- ''हम अंडे से निकल आई हैं, क्या कोई हमें पहचानता है?''
- ''हम कहाँ हैं?''
- '' हमारे माँ-बाप कहाँ हैं, हमें अकेला क्यों छोड़ दिया?''
- ''हमें भूख लगी है, कोई खाना देगा क्या?''

प्रश्न (ख) ''चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं - यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?'' घोंसले से झाँकती गौरैयाँ क्या-क्या बातें कर रही होंगी?

उत्तर— घोंसले से झाँकती गौरैयाँ आपस में शायद इस तरह बातें कर रही होंगी -

- ''यह आदमी कौन है? इतना नाच क्यों रहा है?''
- ''क्या यह हमारे लिए खुश हो रहा है?''
- ''लगता है यह हमें यहाँ से निकाल रहा है।''
- ''क्या अब हम यहाँ नहीं रह सकते हैं?''
- '' अगर इसने हमें यहाँ से निकाल दिया तो हमारे बच्चों का क्या होगा?''
- ''हो सकता है इसको हम पर दया आ जाए!''

प्रश्न (ग) ''एक दिन दो गौरैया सीधी अंदर घुस आई और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं। ''जब उन्होंने पहली बार घर में प्रवेश किया तो उन्होंने आपस में क्या बातें की होंगी?

उत्तर— जब गौरैयों ने पहली बार घर में प्रवेश किया, तो उन्होंने आपस में शायद इस तरह बातें की होंगी—

- ''यह जगह तो पहले से बेहतर लग रही है।''
- ''देखो, यहाँ घोंसला बनाने के लिए बढ़िया गोला है।''
- ''यह घर तो साफ़ और शांत है, बच्चों के लिए सुरक्षित रहेगा।''
- ''चलो यहीं रह लेते हैं, परिवार के लोग भी सही लग रहे हैं।''
- ''इस बार जल्दी से घोंसला बना लेते हैं, पिछली बार देर हो गई थी।''

प्रश्न (घ) ''उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते हुए उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे।'' गौरैयों और उनके बच्चों ने क्या-क्या बातें की होंगी?

उत्तर— गौरैयों और उनके बच्चों ने शायद ये बातें की होंगी—

बच्चों ने कहा होगा—

- ''माँ और पापा आप आ गए! हमें बहुत भूख लगी थी।''
- ''आप हमें अकेला क्यों छोड़ गए थे?''
- ''हमें डर लग रहा था, आप कहाँ थे?''
- ''अब आप हमें छोड़कर मत जाना ?''

माँ-बाप ने कहा होगा—

- ''बिलकुल बच्चों , हम यहीं हैं।''
- ''हम तुम्हारे लिए खाना लेने गए थे।''
- ''अब तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है , हम हर बार आएँगे।''
- ''तुम बहुत बहादुर बच्चे हो!''

बदली कहानी

Page - 23

मान लीजिए कि घोंसले में अंडों से बच्चे न निकले होते। ऐसे में कहानी आगे कैसे बढ़ती? यह बदली हुई कहानी लिखिए।

उत्तर— अगर अंडों से बच्चे न निकले होते , तो लेखक के पिताजी पूरा घोंसला हटा देते जिससे चिड़ियों के अंडे गिर कर टूट जाते। जिसे देखकर गौरैयाँ बहुत दु:खी होतीं। वे समझ जातीं कि अब यहाँ हमारा कुछ नहीं बचा यह सोचकर वह वहाँ से चली जातीं और शायद कभी वापस न आतीं। पिताजी को लगता कि उनका प्रयास सफल रहा और गौरैयाँ अब घर छोड़ गई हैं। माँ और लेखक को अजीब से खालीपन का एहसास होता। वे गौरैयों की चहचहाहट को याद करते। कहानी उदास मोड़ लेती और यह संदेश देती कि यदि हम प्रकृति में ज़रूरत से ज्यादा हस्तक्षेप करें, तो वहाँ की सुंदरता और जीवन रुक सकता है।

कहने के ढंग/क्रिया विशेषण

Page - 23

''माँ खिलखिला कर हँस दीं''

इस वाक्य में 'खिलखिलाकर' शब्द बता रहा है कि माँ कैसे हँसी थीं। कोई कार्य कैसे किया गया है, इसे बताने वाले शब्द 'क्रिया विशेषण' कहलाते हैं। 'खिलखिलाकर' भी एक क्रिया विशेषण शब्द है।

प्रश्न 1. अब नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।

(क) पिताजी ने झिड़ककर कर कहा ''तू खड़ा क्या देख रहा है?''

(ख) ''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो'', माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा।

(ग) ''किसी को सचमुच बाहर निकालता हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए'', उन्होंने गुस्से में कहा।

उत्तर— (क) ईशा ने झिड़ककर कर कहा "आप यहाँ क्या कर रहे हो?"

(ख) शिक्षक ने विद्यार्थियों को पढ़ाई की गंभीरता समझाई।

(ग) "राम कल से तुम मेरे घर मत आना" रमेश गुस्से में बोला।

प्रश्न 2. अब आप इनसे मिलते-जुलते कुछ और क्रिया विशेषण शब्द सोचिए और उनका प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।

(संकेत—धीरे से, ज़ोर से, अटकते हुए, चिल्लाकर, शरमाकर, सहमकर, फुसफुसाते हुए आदि।)

उत्तर—
1. रमा ने धीरे से आवाज़ लगाई।
2. रमेश ज़ोर से चिल्लाया "आप कहाँ हो माँ?"
3. रीमा अटकते हुए बोली "मुझे गाना नहीं आता।"
4. मैंने चिल्लाकर राम को बुलाया लेकिन वह नहीं आया।
5. लड़की शरमाकर कमरे से बाहर चली गई।
6. पटाखे की आवाज़ सुनकर सोता हुआ बच्चा सहमकर उठ गया।
7. रीमा टीना से फुसफुसाते हुए बोली कि यह काम मुझे आता है।

घर के प्राणी

Page - 23

कहानी में आपने पढ़ा कि लेखक के घर मे अनेक प्राणी रहते थे। लेखक ने उनका वर्णन ऐसे किया है जैसे वे भी मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं। कहानी में से चुनकर उन प्राणियों की सूची बनाइए और बताइए कि वे मनुष्यों जैसे कौन-कौन से काम करते थे?

(क) बिल्ली—फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।

(ख) __________

(ग) __________

(घ) __________

(ङ) __________

उत्तर— (क) बिल्ली—फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।

(ख) चूहा—एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है, उसे सर्दी बहुत लगती है।

(ग) चमगादड़—शाम ढलते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पंख फैलाकर कसरत करने लगते हैं।

(घ) चींटियाँ—चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है।

(ङ) चिड़ियाँ—चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?

हेर-फेर मात्रा का

Page - 24

"माँ और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे।"

"पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं।"

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। आपने ध्यान दिया होगा कि शब्द में एक मात्रा-भर के अंतर से उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

अब नीचे दिए गए शब्दों की मात्राओं और अर्थों के अंतर पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।

- नाच-नाचा-नचा __________
- हार-हरा-हारा __________
- पिता-पीता __________
- चूक-चुक __________
- नीचा-नीचे __________
- सहसा-साहस __________

उत्तर—
- नाच - मोहन रंगमंच पर नाच रहा था।
  नाचा - बंदर मदारी के इशारों पर नाचा।
  नचा - मदारी बंदर को अपने इशारों पर नचा रहा है।
- हार - सीमा ने दीपावली पर अपने लिए एक हार खरीदा।
  हरा - रीमा ने हरा दुपट्टा पहना है।
  हारा - रमेश हारा नहीं था ,उसे जानबूझकर हराया गया था।
- पिता - रीमा के पिता बहुत समझदार हैं।
  पीता - रमन रोज़ जूस पीता है।
- चूक - रमेश से यह चूक कैसे हो गई ? वह तो बहुत समझदार है।
  चुक - लेखक के पिताजी की सहनशीलता चुक गई।

- नीचा - मीता ने रीमा के सामने मुझे बहुत नीचा दिखाया।

  नीचे - ऊपर बादल, नीचे धरती बहुत ही सुंदर प्रतीत होते हैं।

- सहसा - सहसा बिजली चमक उठी।

  साहस - रमेश ने चोरों का सामना बहुत साहस से किया।

वाद-विवाद

Page - 24

कहानी में माँ द्वारा कही गई कुछ बातें नीचे दी गई हैं–

''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं।''

''एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।''

''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो। अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब यहाँ से नहीं जाएँगी।''

कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविध का आयोजन कीजिए। वाद-विवाद का विषय है–

''माँ चिड़ियों को घर से निकालना चाहती थीं।''

कक्षा में आधे समूह इस कथन के पक्ष में और आधे समूह इसके विपक्ष में तर्क देंगे।

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

कहानी की रचना

Page - 24

''कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकुराते रहे।''

इस पंक्ति में बताया गया है कि पिताजी का दृष्टिकोण कैसे बदल गया। इस प्रकार यह विशेष वाक्य है। इस तरह के वाक्यों से कहानी और अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

प्रश्न (क) आपको इस कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। उन्हें अपने समूह के साथ मिलकर ढूँढ़िए और उनकी सूची बनाइए।

उत्तर—

विशेषता	उदाहरण
करुणा	माँ चिड़ियों के लिए दरवाज़ा खुला रखने को कहती हैं।
वातावरण का चित्रण	कमरे में रहती चिड़ियाँ, अंडे देना, शोर आदि का विवरण।
भावनात्मक परिवर्तन	पिताजी का नज़रिया बदलना।
प्राकृतिक जीवन के प्रति प्रेम	चिड़ियों को घर में स्थान देना।
परिवार में संवाद	माँ और पिताजी की बातचीत

प्रश्न (ख) इस कहानी की कुछ विशेषताओं को नीचे दिया गया है। इनके उदाहरण कहानी में से चुनकर लिखिए।

आपकी बात

Page - 25

कहानी की विशेषताएँ	कहानी में से उदाहरण
1. किसी बात को कल्पना से बढ़ा-चढ़ाकर कहना	जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो।
2. हास्य यानी हँसी-मज़ाक का उपयोग किया जाना	
3. सोचा कुछ और, हुआ कुछ और	
4. दूसरों के मन के भावों का अनुमान लगाना	
5. किसी की कही बात को उसी के शब्दों में लिखना	
6. किसी प्राणी या उसके कार्य को कोई अन्य नाम देना	
7. किसने किससे कोई बात कही, यह सीधे-सीधे बताए बिना उस संवाद को लिखना	

उत्तर—

कहानी की विशेषताएँ	कहानी में से उदाहरण
1. किसी बात को कल्पना से बढ़ा-चढ़ाकर कहना	जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो।
2. हास्य यानी हँसी मज़ाक का उपयोग किया जाना	''चलो, दो तिनके तो निकल गए,'' माँ हँसकर बोलीं, ''अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगी।''

3. सोचा कुछ और, हुआ कुछ और	पिताजी गौरैयों को भगाना चाहते थे, लेकिन अंत में मुसकराते हुए उन्हें स्वीकार कर लेते हैं।
4. दूसरों के मन के भावों का अनुमान लगाना	चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?
5. किसी की कही बात को उसी के शब्दों में लिखना	एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो, तभी ये निकलेंगी।
6. किसी प्राणी या उसके कार्य को कोई अन्य नाम देना	चींटियों की तो जैसे फ़ौज ही छावनी डाले हुए है।
7. किसने किससे कोई बात कही, यह सीधे-सीधे बताए बिना उस संवाद को लिखना	कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुस्कुराते रहे।

Page - 25

पाठ से आगे

प्रश्न (क) ''गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं।'' आपने अपने घर के आस-पास पक्षियों को क्या-क्या करते देखा है? उनके व्यवहार में आपको कौन-कौन से भाव दिखाई देते हैं।

उत्तर— मैंने अपने घर के पास चिड़ियों को घोंसला बनाते, चोंच में तिनके लाते और अंडों को सेते हुए देखा है। उनके व्यवहार में ममता, सतर्कता और सहयोग की भावना दिखाई देती है। जब कोई खतरा आता है तो वे एक-दूसरे को चेतावनी देती हैं कि खतरा समीप है। वे अपने बच्चों की देखभाल भी बहुत प्यार से करती हैं।

प्रश्न (ख) ''कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।'' कहानी के अंत में पिताजी गौरैयों का अपने घर में रहना स्वीकार कर लेते हैं। क्या आप भी कोई स्थान या वस्तु किसी अन्य के साथ साझा करते है? उनके बारे में बताइए साझेदारी में यदि कोई समस्या आती है तो उसे कैसे हल करते हैं?

उत्तर— हाँ, मैं अपनी छोटी बहन के साथ एक ही अध्ययन कक्ष साझा करता हूँ। कभी-कभी समय या स्थान को लेकर मतभेद हो जाते हैं, लेकिन हम बात करके समाधान निकाल लेते हैं। हम समय बाँट लेते हैं और एक-दूसरे की ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं।

प्रश्न (ग) परिवार के लोग गौरैयों को घर से बाहर भगाने की कोशिश करते हैं, किन्तु गौरैयों के बच्चों के कारण उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि किसी को देखकर या किसी से मिलकर आपका दृष्टिकोण बदल गया हो?

उत्तर— हाँ, पहले मैं कुत्तों से बहुत डरता था, लेकिन जब मैंने एक घायल कुत्ते को लाचार देखा तो मुझे रहा न गया। मैंने उसका इलाज करवाकर ठीक किया। उसके बाद मुझे जानवरों के प्रति दया और अपनापन महसूस होने लगा। अब मैं अक्सर अपने मौहल्ले के कुत्तों को खाना और पानी देता हूँ।

चिड़ियों का घोंसला

Page - 26

घोंसला बनाना चिड़ियों के जीवन में एक सामान्य हिस्सा है। विभिन्न पक्षी अलग-अलग तरह के घोंसले बनाते हैं। इन घोंसलों में वे अपने अंडे देते हैं और अपने चूजों को पालते हैं।

प्रश्न (क) अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के घोंसले ढूँढ़िए और उन्हें ध्यान से देखिए और नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए। (सावधानी—उन्हें हाथ न लगाएँ अन्यथा पक्षियों, उनके अंडों और आपको भी खतरा हो सकता है।)

क्रम संख्या	घोंसले को कहाँ देखा	घोंसला किन चीज़ों से बनाया गया था	घोंसला खाली था या नहीं	घोंसला किस पक्षी का था

उत्तर –

क्रम संख्या	घोंसले को कहाँ देखा	घोंसला किन चीज़ों से बनाया गया था	घोंसला खाली था या नहीं	घोंसला किस पक्षी का था
1.	आम के पेड़ की ऊँची डाल पर	तिनके, सूखी घास, छोटे-छोटे पत्ते	नहीं, उसमें अंडे थे।	कबूतर
2.	बरामदे की खिड़की की ग्रिल पर	धागे, रुई, प्लास्टिक के टुकड़े	नहीं, उसमें चूज़े थे।	गौरैया
3.	स्कूल की पानी की टंकी के पास	सूखे पत्ते और प्लास्टिक के रेशे	हाँ, वह खाली था।	मैना
4.	नीम के पेड़ के तने की खोखल में	लकड़ी के बुरादे और तिनकों से	नहीं, आवाज़ें आ रही थीं।	कठफोड़वा
5.	छत पर लगी टीन के नीचे	घास और सूखे तिनकों से	हाँ, उसमें अंडे थे।	फ़ाख्ता

प्रश्न (ख) विभिन्न पक्षियों के घोंसलों के संबंध में एक प्रस्तुति तैयार कीजिए। उसमें आप चाहें तो उनके चित्र और थोड़ी रोचक जानकारी सम्मिलित कर सकते हैं।

उत्तर – विद्यार्थी स्वयं करें।

मल्हार

Page - 27

''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे! माँ ने व्यंग्य से कहा।''

आप समझ गए होंगे कि इस वाक्य में माँ ने पिताजी से कहा है कि वे चिड़ियों को नहीं निकाल सकते। इस प्रकार से कही गई बात को 'व्यंग्य करना' कहते हैं।

व्यंग्य का अर्थ होता है– हँसी-मज़ाक या उपहास के माध्यम से किसी कमी, बुराई या विडंबना को उजागर करना।

व्यंग्य में बात को सीधे न कहकर **उलटा या संकेतात्मक** ढंग से कहा जाता है ताकि उसमें **चुटकीलापन** भी हो और **गंभीर सोच** की संभावना भी बनी रहे। अनेक बार व्यंग्य में हास्य भी छिपा होता है।

प्रश्न (क) आपको इस कहानी में कौन-कौन से वाक्य पढ़कर हँसी आई? उन वाक्यों को चुनकर लिखिए।

प्रश्न (ख) अब चुने हुए वाक्यों में से कौन- कौन से वाक्य 'व्यंग्य' कहे जा सकते हैं? उन पर सही का चिह्न लगाइए।

उत्तर – (क) हँसी वाले वाक्य–

1. ''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!''
2. ''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। तभी इन्हें उड़ा देते तो उड़ जातीं!''
3. ''चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?''
4. ''अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगे।''
5. ''जिस दिन दरवाज़ा खुला छोड़ दिया, उसी दिन इन्होंने अंडे दे दिए!''

(ख) वाक्य व्यंग्य हैं या नहीं -

1. ''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!'' ✓
2. ''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। तभी इन्हें उड़ा देते तो उड़ जातीं!'' ✓
3. ''चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?'' ×
4. ''अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगे।'' ✓
5. ''जिस दिन दरवाज़ा खुला छोड़ दिया, उसी दिन इन्होंने अंडे दे दिए!'' ✓

आज की पहेली

Page - 28

नीचे दी गई चित्र-पहेली में बिल्ली को चूहे तक पहुँचाइए।

विद्यार्थी स्वयं करें।

झरोखे से

Page - 28

'दो गौरैया' कहानी में आपने पढ़ा कि ''दो गौरैया'' लेखक के घर में बिन बुलाए अतिथि की तरह आ जाती हैं। पिछले कई वर्षों से गाँव-नगरों में इन नन्हीं चिड़ियों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। इसलिए भारत सरकार ने इनके संरक्षण के लिए 20 मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' घोषित किया है। आइए, पढ़ते हैं 'विश्व गौरैया दिवस' पर प्रेस सूचना ब्यूरो द्वारा प्रकाशित लेख का एक अंश-

कभी बहुतायत में पाई जाने वाली घरेलू गौरैया अब कई जगहों पर एक दुर्लभ दृश्य और रहस्य बन गई है। इन छोटे प्राणियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उनकी रक्षा करने के लिए, हर साल 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है।

भारत में गौरैया सिर्फ़ पक्षी नहीं हैं; वे साझा इतिहास और संस्कृति का प्रतीक हैं। हिंदी में ''गौरैया'', तमिल में ''कुरुवी'' और उर्दू में ''चिरिया'' जैसे कई नामों से जानी जाने वाली गौरैया पीढ़ियों से दैनिक जीवन का हिस्सा रही हैं।

उनकी महत्ता के बावजूद, गौरैया तेज़ी से लुप्त हो रही हैं। इस गिरावट के कई कारण हैं। सीसा रहित पेट्रोल के उपयोग से ज़हरीले यौगिक पैदा हुए हैं जो उन कीटों को नुकसान पहुँचाते हैं, जिन पर गौरैया भोजन के लिए निर्भर हैं। शहरीकरण ने उनके प्राकृतिक घोंसले के स्थान भी छीन लिए हैं। आधुनिक इमारतों में वे स्थान नहीं होते जहाँ गौरैया घोंसला बना सकें, जिससे उनके बच्चों को पालने के लिए जगह कम हो गई है।

साभार—पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (भारत सरकार)

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

पढ़ने के लिए

Page - 29

मित्र लाभ

दक्षिण देश के एक प्रांत में महिलारोप्य नाम का एक नगर था। वहाँ एक विशाल वटवृक्ष की शाखाओं पर लघुपतनक नाम का कौआ रहता था। एक दिन वह अपने आहार की चिंता में शहर की ओर चला ही था कि उसने देखा कि एक फटे पाँव और बिखरे बालों वाला भयंकर व्याध उधर ही चला आ रहा है। कौवे को उसे देखकर वृक्ष पर रहने वाले अन्य पक्षियों की चिंता हुई। उन्हें व्याध के चंगुल से बचाने के लिए वह पीछे लौट पड़ा और वहाँ सब पक्षियों को सावधान कर दिया और कहा कि जब यह व्याध वृक्ष के पास भूमि पर अनाज के दाने बिखेरे, तब कोई भी पक्षी उन्हें चुगने के लालच से न जाय, उन दानों को कालकूट की तरह जहरीला समझे।

कौआ अभी यह कह ही रहा था कि व्याध ने वटवृक्ष के नीचे आकर दाने बिखेर दिए और स्वयं दूर जाकर झाड़ी के पीछे छिप गया। पक्षियों ने भी लघुपतनक का उपदेश मानकर दाने नहीं चुगे। वे उन दानों को हलाहल विष की तरह मानते रहे किंतु, इसी बीच में व्याध के सौभाग्य से कबूतरों का राजा चित्रग्रीव अपने हज़ारों अनुचरों के सहित उड़ता हुआ वहाँ आया। लघुपतनक ने उसे भी चेतावनी दी परंतु वह भूमि पर बिखरे हुए उन दानों को चुगने की लालसा को न रोक सका। परिणाम यह हुआ कि वह अपने परिजनों समेत जाल में फँस गया। लोभ का यही परिणाम होता है। लोभ से विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है। जाल में फँसने के बाद चित्रग्रीव ने अपने साथी कबूतरों को समझाया कि वे डरें नहीं और एकजुट होकर पूरी शक्ति से जाल समेत उड़कर व्याध की दृष्टि से ओझल हो जाएँ तो बच जाएँगे। तत्पश्चात सब कबूतर जाल लेकर उड़ गये और व्याध देखता रह गया! लघुपतनक ने जब देखा तो वह कौतूहलवश कबूतरों के पीछे-पीछे उड़ने लगा।

व्याध जब दूर हो गया तब चित्रग्रीव ने अपने साथियों को कहा- ''व्याध तो लौट गया। अब चिंता की कोई बात नहीं। चलो, हम महिलारोप्य शहर के पूर्वोत्तर भाग की ओर चलें। वहाँ मेरा घनिष्ठ मित्र हिरण्यक नाम का चूहा रहता है। उससे हम अपने जाल को कटवा लेंगे। तभी हम आकाश में स्वच्छंद घूम सकेंगे।''

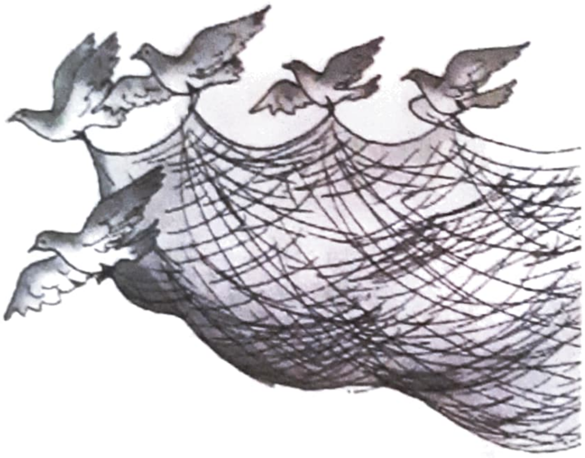

वहाँ हिरण्यक नाम का चूहा अपने एक हज़ार बिलों वाले दुर्ग में रहता था। इसीलिए उसे डर नहीं लगता था। चित्रग्रीव ने उसके द्वार पर पहुँच कर पुकारा– ''मित्र हिरण्यक! शीघ्र आओ। मुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है।''

उसकी आवाज़ सुनकर हिरण्यक ने अपने ही बिल में छिपे -छिपे प्रश्न किया- ''तुम कौन हो ? कहाँ से आए हो? क्या प्रयोजन है? ...

चित्रग्रीव ने कहा–''मैं तुम्हारा मित्र चित्रग्रीव हूँ। तुम जल्दी बाहर आओ; मुझे तुमसे विशेष काम है।''

यह सुनकर हिरण्यक प्रफुल्लित होकर अपने बिल से बाहर आया। अपने मित्र चित्रग्रीव को साथियों सहित जाल में फँसा देखकर दुखित स्वर में बोला, ''मित्र! यह क्या हो गया तुम्हें?'' चित्रग्रीव ने कहा – ''जीभ के लालच से हम जाल में फँस गए। तुम हमें जाल से मुक्त कर दो।'' हिरण्यक जब चित्रग्रीव के जाल का धागा काटने लगा तब उसने कहा-''पहले मेरे साथियों के बंधन काट दो, बाद में मेरे काटना।''

हिरण्यक–''तुम इन सब के नायक हो, पहले अपने बंधन कटवा लो, साथियों के पीछे कटवाना।''

चित्रग्रीव ''वे मेरे अनुचर हैं, अपने घर-बार को छोड़कर मेरे साथ आए हैं। मेरा धर्म है कि पहले इनकी सुख-सुविधा को दृष्टि में रखूँ।''

हिरण्यक चित्रग्रीव की यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सबके बंधन काटकर चित्रग्रीव से कहा–''मित्र! अब अपने घर जाओ। विपत्ति के समय फिर मुझे याद करना।'' उन्हें भेजकर हिरण्यक चूहा अपने बिल में घुस गया। चित्रग्रीव भी मित्रों सहित अपने घर चला गया।

लघुपतनक कौआ यह सब दूर से देख रहा था। वह हिरण्यक के कौशल और उसकी सज्जनता पर मुग्ध हो गया। उसने मन ही मन सोचा -''यद्यपि मेरा स्वभाव है कि मैं किसी का विश्वास नहीं करता, किसी को अपना हितैषी नहीं मानता, तथापि इस चूहे के गुणों से प्रभावित होकर मैं इसे अपना मित्र बनाना चाहता हूँ।''

यह सोचकर वह हिरण्यक के बिल के दरवाज़े पर जाकर चित्रग्रीव के समान ही आवाज़ बनाकर हिरण्यक को पुकारने लगा। उसकी आवाज़ सुनकर हिरण्यक ने सोचा, यह कौन-सा कबूतर है? क्या इसके बंधन कटने शेष रह गए हैं?

हिरण्यक ने पूछा–''तुम कौन हो?''

लघुपतनक– ''मैं लघुपतनक नाम का कौआ हूँ।''

हिरण्यक– ''मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम अपने घर चले जाओ।''

लघुपतनक– ''मुझे तुम से बहुत जरूरी काम है; एक बार दर्शन तो दे दो।''

हिरण्यक– ''मुझे तुम्हें दर्शन देने का कोई प्रयोजन दिखाई नहीं देता।''

लघुपतनक– ''चित्रग्रीव के बंधन काटते देखकर मुझे तुमसे बहुत प्रेम हो गया है। कभी मैं भी बंधन में पड़ जाऊँगा तो तुम्हारी सेवा में आना पड़ेगा।''

हिरण्यक– ''तुम भोक्ता हो, मैं तुम्हारा भोजन हूँ; हम में प्रेम कैसा? जाओ, दो प्रकृति से विरोधी जीवों में मैत्री नहीं हो सकती।''

लघुपतनक– ''हिरण्यक! मैं तुम्हारे द्वार पर मित्रता की भीख लेकर आया हूँ। तुम मैत्री नहीं करोगे तो यहीं प्राण दे दूँगा।''

हिरण्यक– ''हम सहज - वैरी हैं, हममें मैत्री नहीं हो सकती।''

लघुपतनक– ''मैंने तो कभी तुम्हारे दर्शन भी नहीं किए। हममें वैर कैसा?''

हिरण्यक– ''वैर दो तरह का होता है– सहज और कृत्रिम । तुम मेरे सहज-वैरी हो ।''

लघुपतनक– ''मैं दो तरह के वैरों का लक्षण सुनना चाहता हूँ।''

हिरण्यक– ''जो वैर कारण से हो वह कृत्रिम होता है, कारणों से ही उस वैर का अंत भी हो सकता है। स्वाभाविक वैर निष्कारण होता है, उसका अंत हो ही नहीं सकता।''

लघुपतनक ने बहुत अनुरोध किया, किंतु हिरण्यक ने मैत्री के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। तब लघुपतनक ने कहा ''यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास न हो तो तुम अपने बिल में छिपे रहो, मैं बिल के बाहर बैठा-बैठा ही तुमसे बातें कर लिया करूँगा।''

हिरण्यक ने लघुपतनक की यह बात मान ली। किंतु, लघुपतनक को सावधान करते हुए कहा—"कभी मेरे बिल में प्रवेश करने की चेष्टा मत करना।" कौआ इस बात को मान गया। उसने शपथ ली कि कभी वह ऐसा नहीं करेगा।

तब से वे दोनों मित्र बन गए। नित्यप्रति परस्पर बातचीत करते थे। दोनों के दिन बड़े सुख से कट रहे थे। कौआ कभी-कभी इधर-उधर से अन्न संग्रह करके चूहे को भेंट में भी देता था। मित्रता में यह आदान-प्रदान स्वाभाविक था। धीरे-धीरे दोनों की मैत्री घनिष्ठ होती गई। दोनों एक क्षण भी एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते थे।

बहुत दिन बाद एक दिन आँखों में आँसू भर कर लघुपतनक ने हिरण्यक से कहा—"मित्र! अब मुझे इस देश से विरक्ति हो गई है, इसलिए दूसरे देश में चला जाऊँगा।"

कारण पूछने पर उसने कहा—"इस देश में अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष पड़ गया है। लोग भूखे मर रहे हैं, एक दाना भी नहीं रहा। घर-घर में पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल बिछा गए हैं। मैं तो भाग्य से ही बच गया। ऐसे देश में रहना ठीक नहीं है।"

हिरण्यक— "कहाँ जाओगे?"

लघुपतनक— "दक्षिण दिशा की ओर एक तालाब है। वहाँ मन्थरक नाम का एक कछुआ रहता है। वह भी मेरा वैसा ही घनिष्ठ मित्र है जैसे तुम हो। उसकी सहायता से मुझे पेट भरने योग्य अन्न-कौर आदि अवश्य मिल जाएगा।"

हिरण्यक— "यही बात है तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगा।"

लघुपतनक— "किंतु, मैं तो आकाश में उड़ने वाला हूँ। मेरे साथ तुम कैसे जाओगे?"

हिरण्यक— "मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर वहाँ ले चलो।"

लघुपतनक यह बात सुनकर प्रसन्न हुआ। हिरण्यक चूहा लघुपतनक कौवे की पीठ पर बैठ गया। दोनों आकाश में उड़ते हुए तालाब के किनारे पहुँचे।

मन्थरक ने जब देखा कि कोई कौआ चूहे को पीठ पर बिठा कर आ रहा है तो वह डर के मारे पानी में घुस गया। लघुपतनक को उसने पहचाना नहीं।

तब लघुपतनक हिरण्यक को थोड़ी दूर छोड़कर पानी में लटकती हुई शाखा पर बैठ कर ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा—"मन्थरक! मन्थरक!! मैं तुम्हारा मित्र लघुपतनक आया हूँ। आकर मुझसे मिलो।"

लघुपतनक की आवाज़ सुनकर मन्थरक प्रसन्न होकर बाहर आया। हिरण्यक भी तब वहाँ आ गया और मन्थरक को प्रणाम करके वहीं बैठ गया।

मन्थरक कछुआ, लघुपतनक कौआ और हिरण्यक चूहा वहाँ बैठे-बैठे बातें कर रहे थे कि वहाँ चित्रांग नाम का हिरन कहीं से दौड़ता-हाँफ़ता आ गया। एक व्याध उसका पीछा कर रहा था। उसे आता देखकर कौआ उड़कर वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। हिरण्यक पास के बिल में घुस गया और मन्थरक तालाब के पानी में जा छिपा।

कौवे ने हिरन को अच्छी तरह देखने के बाद मन्थरक से कहा—"मित्र मन्थरक! यह हिरन पानी पीने के लिए तालाब पर आया है।"

मन्थरक—"यह हिरन बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा है और डरा हुआ-सा है। इसलिए यह प्यासा नहीं, बल्कि व्याध के डर से भागा हुआ है। देखो तो सही, इसके पीछे व्याध आ रहा है या नहीं?"

दोनों की बात हिरन ने सुन ली और बोला—"मन्थरक! मेरे भय का कारण तुम जान गए हो। मैं व्याध के बाणों से डरकर बड़ी कठिनाई से यहाँ पहुँच पाया हूँ। तुम मेरी रक्षा करो। अब तुम्हारी शरण में हूँ। मुझे कोई ऐसी जगह बतलाओ जहाँ व्याध न पहुँच सके।"

मन्थरक ने हिरन को घने जंगलों में भाग जाने की सलाह दी। किंतु लघुपतनक ने ऊपर से देखकर बतलाया कि व्याध दूसरी दिशा में चला गया है, इसलिए अब डर की कोई बात नहीं है। अब चित्रांग की भी लघुपतनक, हिरण्यक और मन्थरक से गाढ़ी मित्रता हो गई।

एक दिन हिरन घूमता हुआ जंगल में चला गया और शाम तक वापस नहीं लौटा। उसके तीनों मित्रों को संदेह होने लगा कि कहीं वह व्याध के जाल में न फँस गया हो, अथवा शेर, बाघ आदि ने उस पर हमला न कर दिया हो। घर में बैठे स्वजन अपने प्रवासी प्रियजनों के संबंध में सदा शंकित रहते हैं।

बहुत देर तक भी चित्रांग हिरन नहीं आया तो मन्थरक कछुए ने लघुपतनक कौवे को जंगल में जाकर हिरन को खोजने की सलाह दी। लघुपतनक ने कुछ दूर जाकर देखा कि वहाँ चित्रांग एक जाल में बँधा हुआ है। लघुपतनक उसके पास गया। उसे देखकर चित्रांग की आँखों में आँसू आ गए। वह बोला— "अब मेरी मृत्यु निश्चित है। अन्तिम समय में तुम्हारे दर्शन कर के मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। प्राण विसर्जन के समय मित्र-दर्शन बड़ा सुखद होता है। मेरे अपराध क्षमा करना।"

लघुपतनक ने धीरज बँधाते हुए कहा—"घबराओ मत! मैं अभी हिरण्यक चूहे को बुला लाता हूँ। वह तुम्हारे जाल काट देगा।"

यह कहकर वह हिरण्यक के पास चला गया और शीघ्र ही उसे पीठ पर बिठाकर ले आया। हिरण्यक अभी जाल काटने की सोच ही रहा था कि लघुपतनक ने वृक्ष के ऊपर से किसी को देखकर कहा—"यह तो बहुत बुरा हुआ।"

हिरण्यक ने पूछा—"क्या कोई व्याध आ रहा है?"

लघुपतनक— "नहीं, व्याध तो नहीं, किंतु मन्थरक कछुआ इधर चला आ रहा है।"

हिरण्यक— "तब तो खुशी की बात है। दुखी क्यों होते हो?"

लघुपतनक— "दुखी इसलिए होता हूँ कि व्याध के आने पर मैं ऊपर उड़ जाऊँगा, हिरण्यक बिल में घुस जाएगा, चित्रांग भी छलाँगे मारकर घने जंगल में घुस जाएगा, लेकिन मन्थरक कैसे अपनी जान बचाएगा? यही सोचकर चिंतित हो रहा हूँ।"

मन्थरक के वहाँ आने पर हिरण्यक ने मन्थरक से कहा—"मित्र! तुमने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया। अब भी वापस लौट जाओ, कहीं व्याध न आ जाए।"

इसीलिए मन्थरक ने कहा—"मित्र! मैं अपने मित्र को आपत्ति में जानकर वहाँ नहीं रह सका। सोचा, उसकी आपत्ति में हाथ बटाऊँगा, तभी चला आया।"

ये बातें हो ही रही थीं कि उन्होंने व्याध को उसी ओर आते देखा। उसे देखकर चूहे ने उसी क्षण चित्रांग के बंधन काट दिए। चित्रांग भी उठकर घूम-घूमकर पीछे देखता हुआ आगे भाग खड़ा हुआ। लघुपतनक वृक्ष पर उड़ गया। हिरण्यक पास के बिल में घुस गया।

व्याध अपने जाल में किसी को न पाकर बड़ा निराश हुआ। वहाँ से वापस जाने को मुड़ा ही था कि उसकी दृष्टि धीरे-धीरे जाने वाले मन्थरक पर पड़ गई। उसने सोचा, "आज हिरन तो हाथ आया नहीं, कछुए को ही ले चलता हूँ। कछुए को ही आज भोजन बनाऊँगा। उससे ही पेट भरूँगा।" यह सोचकर वह कछुए को जाल में बाँधकर कंधे पर डालकर चल दिया। उसे ले जाते देख हिरण्यक और लघुपतनक को बड़ी चिंता हुई। दोनों मित्र मन्थरक को बड़े प्रेम और आदर से देखते थे। चित्रांग ने भी मन्थरक को व्याध के कन्धों पर देखा तो व्याकुल हो गया। तीनों मित्र मन्थरक की मुक्ति का उपाय सोचने लगे।

कौवे ने तब एक उपाय ढूँढ निकाला। वह यह कि चित्रांग व्याध के मार्ग में तालाब के किनारे जाकर लेट जाए! मैं तब उसे चोंच मारने लगूँगा। व्याध समझेगा कि हिरन मरा हुआ है। वह मन्थरक को ज़मीन पर रखकर इसे लेने के लिए जब आएगा तो हिरण्यक तीव्रता से मन्थरक के बंधन काट दे। मन्थरक तालाब में घुस जाए और चित्रांग छलाँगें मारकर घने जंगल में चला जाय। मैं उड़कर वृक्ष पर चला ही जाऊँगा। सभी बच जाएँगे, मन्थरक भी छूट जाएगा।

तीनों मित्रों ने यही उपाय किया। चित्रांग तालाब के किनारे मृतवत जा लेटा। कौआ उसकी गरदन पर सवार होकर चोंच चलाने लगा। व्याध ने देखा तो समझा कि हिरन जाल से छूट कर दौड़ता-दौड़ता यहाँ मर गया है। उसे लेने के लिए वह जाल बद्ध कछुए को ज़मीन पर छोड़कर आगे बढ़ा तो हिरण्यक ने अपने तीखे दाँतों से जाल काट दिया। मन्थरक पानी में घुस गया। चित्रांग भी भाग गया।

व्याध ने चित्रांग को दौड़ते देखा तो आश्चर्य में डूब गया। फिर देखा कि कछुआ भी जाल से निकलकर भाग गया है, तब वह और भी विस्मित हुआ और निराश होकर चला गया।

उधर चारों मित्र लघुपतनक, मन्थरक, हिरण्यक और चित्रांग प्रसन्नता से फूले नहीं समाते थे। मित्रता के बल पर ही चारों ने व्याध से मुक्ति पाई थी।

मित्रता में बड़ी शक्ति है। हमें अपने मित्रों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

अभी आपने जो कहानी पढ़ी वह *पंचतंत्र* से ली गई है। *पंचतंत्र* हमारे देश की ऐसी अद्भुत पुस्तक है जो आज भी विश्व में मनोरंजन और नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से पढ़ी पढ़ाई जाती है। अपने पुस्तकालय में से *पंचतंत्र* की कहानियों की पुस्तक खोजकर पढ़िए और इसकी कोई एक कहानी कक्षा में सुनाइए।